International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 29-31

जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'छप्पर' की प्रासंगिकता आज-कल

[1] Aswathi M Nair, [2] Dr. B Anirudhan
[1] M.Phil Hindi, Nehru Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India
[2] Professor and Principal, Nehru Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India

सारांश
जयप्रकाश कर्दम का 'छप्पर' उपन्यास पहला दलित उपन्यास है| जिसमें दलितों के जिंदगी के बारे में बताते है | लेकिन आज भी दलितों की स्थिति उतनी बुरी है, नहीं| तो छप्पर उपन्यास प्रासंगिक है या नहीं, छप्पर प्रासंगिक है दलितों के लिए भी और गैर दलितों के लिए भी | भारत में अभावग्रस्थ जीवन जीने वाले सभी लोग दलित नहीं है | छप्पर एक उम्मीद का किरण है, वह सबको आगे बढने की शक्ति देता है| छप्पर में लोगों को आपस में मिलके रहने की सुविचार लेखक सबको देते हैं |

मूल शब्द : दलित, अभाव्ग्रस्त जीवन, बराबरी, उम्मीद, व्यवस्था |

प्रस्तावना
जयप्रकाश कर्दम हिंदी दलित साहित्य के महत्वपूर्ण लेखक है| वे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं संपादक के रूप में प्रसिद्ध है| इनका प्रथम उपन्यास करुणा है जो 1986 में प्रकाशित हुआ| इनके दो कविता संग्रह है "गूंगा नहीं था मैं" और "तिनका तिनका आग"| वह अपने लेखनों से समाज को सुधारने की कोशिश की है, आज भी वह अपना कोशिश जारी रखा है| इनकी "द चमार्ज़" नामक अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी में "चमार" नाम से अनुवाद हुआ है, ये एक सफल संपातक भी है| कर्दम जी भी अपने जीवन में अनेक कठिनाईयों और संघर्षों का सामना किया है| इसी कारण इन्हें "डगर से लेकर राजपथ तक के संघर्षशील यात्री" कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा|"[(1)]

छप्पर उपन्यास द्वारा जयप्रकाश कर्दम दलितों की अभावग्रस्त जीवन का चित्रण किया है|"दलित वह व्यक्ति है जो, विशिष्ट सामाजिक स्थिति का अनुभव करता है, जिसके जीने का अधिकार को छीना गया है| मात्र जन्म के आधार पर जिनको समाज में एक प्रकार का जीवन मिला है| मनुष्य के रूप में जिनके अधिकारों को ठुकराया गया है|"[(2)] अधिकांश दलित निर्धनता एवं अभावग्रस्त जिंदगी जीते है| इन लोगों के पास रहने के लिए छप्पर, छरिया घर, या झोपड़ी मात्र होते है| इसी छप्पर में रहकर वे लोग अपने सपने बुनते है| "प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था का जाति से कोई संबंध नहीं था|"[(3)]| इस आधार पर छप्पर का अर्थ क्या हो सकता है, जहाँ सुन्हरे कल के इंतज़ार है, जहाँ माता-पिता का मेहनत है, जहाँ आँसू ख़ुशी और अभाव है वही छप्पर है| इस संदर्भ में स्वयं जयप्रकाश कर्दम जी लिखते है – छप्पर के साथ दलितों की पहचान जुडी हुई है| इन छप्परों में रहकर ही बहुत सी दलितों ने उन्नति की है, और छप्परों से बाहर निकलकर अच्छे - पक्के मकान में रहने का स पना प्रत्येक दलित देखता है, तो छप्पर दलितों के सपनों के साथ भी जुड़ा हुआ है| इस तरह दलित जीवन में छप्पर के अनेक अर्थ है| यह दलित जीवन का बहुत बड़ा प्रतीक है| उपन्यास के नायक चन्दन का परिवार छप्पर में रहता है| उसी छप्पर से निकलकर चन्दन शहर जाता है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने समाज को शोषण के मूल अज्ञानता की खाई से निकलने के लिए उन्हें शिक्षित बनाने का अभियान चलाता है| बराबरी का मतलब है हर क्षेत्र में बराबरी| मान सम्मान की ढंग में भी बराबरी का होना चाहिए| [(4)] इन सब बातों को ध्यान में रखने पर मुझे भी उपन्यास का नाम 'छप्पर' ही सर्वाधिक उपयुक्त लगा|

'छप्पर' छोटा होता है, लेकिन उसमें रहनेवाले लोगों का उम्मीद बड़ा होता है| वहाँ प्यार ही प्यार देखने को मिलेगा| खुद दुःख में रहकर भी वह दूसरों के चेहरे में ख़ुशी और उम्मीद लाने की कोशिश करता है| यहाँ अपने सपनों को पंख देने की साधन है 'छप्पर'| कुछ लोगों के पास रहने के लिए छप्पर भी नहीं होता, उन लोगों को भी छप्पर एक उम्मीद बनकर सामने आते है| तो 'छप्पर' एक मामूली चीज़ नहीं है, इन छप्परों में सुरक्षा का एक चाबी होता है, जो हर किसी के पास नहीं होता| तो छप्पर नाम ही इस उपन्यास के लिए सार्थक है|

छप्पर उपन्यास आज भी प्रासंगिक है क्यूँकि आज भी भारतीय समाज विसंगतियों का भण्डार है| दलित ही नहीं सवर्णों का भी जीवन आज उतना सराहनीय नहीं है| भारत में सवर्ण और अवर्ण दोनों ही अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे है|

आज भी अखबारों में दलितों के खिलाफ अत्याचार देखने को मिलते है| उसी तरह सवर्णों के खिलाफ अवर्णों का भी अत्याचार देखने को मिलते है| तो सुधरना है तो दोनों को भी सुधरना है| लेकिन आज भी दलितों के तरफ बोलने के लिए लोग ज्यादा होते है| लेकिन सवर्णों के दुःख,

कठिनाई आदि के बारे में लिखने के लिए कोई नहीं है| आज दलितों को आरक्षण प्राप्त है| आज समाज में सवर्ण और अवर्ण दोनों सुरक्षित नहीं है| बात समानता की है तो लोगों को अपने कर्म को बदलना चाहिए, बाद में धर्म को सुधारेंगे|"सर्वप्रथम वर्ण व्यवस्था का निर्धारण व्यक्ति के कर्म से होता था| प्राचीन काल में वर्ण व्यवस्था का जाति से कोई संबंध नहीं था| व्यक्ति का वर्ण उसके द्वारा किया गया कर्मों से निर्धारित होता था|"[5]| तो आगे भी ऐसा होना अनिवार्य है|

तो छप्पर प्रासंगिक है दलितों के लिए भी गैर दलितों के लिए भी| छप्पर यहाँ एक उम्मीद का किरण है, जो भारतीय अभावग्रस्थ जिंदगी जीते है, उसकेलिए एक उम्मीद का किरण है जयप्रकाश कर्दम का छप्पर उपन्यास| घृणा, अनादर, असमानता, अन्याय और अस्पृश्यता की आग में जलकर दलित समाज आज अच्छी स्थिति में पहुँच गया है| दलित और गैर दलितों के पास भी जीवन का विशिष्ट अनुभव होता है| छप्पर में रहने वाले लोगों का भिन्न अनुभव और महल में जीने वाले लोगों का भिन्न अनुभव नहीं होता| सबके जीवन में परेशानियाँ है सबके जीवन में सुख-दुःख है|

छप्पर में नये उम्मीदों का भरपूर चित्रण है, जिससे हर किसी को छप्पर एक प्रतीक के रूप में नज़र आता है| छप्पर नए उम्मीदों का समानता का, साझेदारी का, विनम्रता का और कर्तव्य का प्रतीक बनकर समाज को एक नये सन्देश देता है| छप्पर हो या महल, आगे बढ़ने के लिए शिक्षा ही काफी होता है, उसमें एक हत्यार की ताकत होता है|

छप्पर उपन्यास दलित साहित्य का एक मौलिक उपन्यास है| इसके द्वारा दलित जीवन की समस्या और अभावता हमारे सामने आता है| यह एक सर्वश्रेष्ट कृति है, जिसमें समस्याओं का भरपूर चित्रण मिलता है और बदलाव के उम्मीद से यह उपन्यास समाप्त होता है| जयप्रकाश कर्दम ने इस उपन्यास द्वारा दलित समाज को ऊर्जा दिलाने की कोशिश की है| उन्होंने चन्दन द्वारा संतनगर के लोगों को एक नया रास्ता दिखाया, उन लोगों को दरिद्रता पूर्ण जीवन से मुक्ति दिलाया और शिक्षा के प्रति उनको आकर्षित किया| इसी से संतनगर के लोगों में बदलाव आया, और वह लोग शिक्षा को प्राप्त करके अच्छे जिंदगी जीने लगी| चन्दन दलितों को सामाजिक सम्मान व समानता प्राप्त करने के लिए पैसे से ज्यादा शिक्षा को अधिक महत्व दिया है|

लेखक ने रजनी नामक उच्चवर्गीय पात्र के माध्यम से सवर्णों को अवर्णों के प्रति व्यवहार सुधारने की कोशिश की है| रजनी अपनी कर्मों से अपनी पिता के भी मन परिवर्तित कर देती है और अपने गॉव के अन्य सवर्णों के मानसिकता में परिवर्तन लाती है| ऐसे वह गॉव में समता, बंधुता स्थापित करती है| कमला के माध्यम से लेखक उन अत्याचारित युवतियों का चित्रण किया है जो आज भी हमारे अमाज में है| जो इतने कमज़ोर हालातों में भी अपने आपको हारने न देती है| वह सामाजिक आन्दोलन पर भाग लेती है और समाज को सुधारने की कोशिश करती है| छप्पर द्वारा लेखक सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से समाज में बदलाव लाता है| अंत में उपन्यासकार द्वारा अंतरजातीय विवाह का मार्ग बताया है, जिसके द्वारा एक बदलाव का महास्वप्न हमें दिखाई देता है|

छप्पर में उस समय जो दलितों की स्थिति थी, वह दिखाई देता है| लेकिन आज जो बदलाव है, वह हमारे सामने है| आज हर क्षेत्र में दलित अपना हक़ जमा चुका है, उसका एक नया उदहारण है 'रामनाथ कोविंद' जो हमारा चौदहवीं राष्टपति है| इसके पहले के.आर.नारायण भी एक दलित राष्ट्रपति रह चुका है| दलित होकर भी वह एक राष्ट्र का भार अपने कर्तव्य समझकर करता है तो यहाँ पता चलता है कि समाज में जो कुछ स्थिति था वह सब कुछ बदल चुका है| तो इससे समझ में आता है कि दलित और गैरदलित का सवाल ही नहीं उठता|

आज समाज में दलित - गैर दलित ऐसा बदलाव कम होता हुआ नज़र आता है| दलित को शिक्षा के प्राप्ति के लिए सरकार द्वारा आरक्षण भी प्राप्त है| कामकाज के क्षेत्र में भी दलितों को आरक्षण है| छप्पर उपन्यास की तरह की स्थिति आज समाज में देखने को नहीं मिलता है, फिर-भी अभावग्रस्त जीवन दिखाई देता है| आज दलितों में ही नहीं गैर दलितों में भी अबाव्ग्रस्त जीवन दिखाई देता है| भारत के जनता जो कुछ भी भोगता है, वह सब जाति व्यवस्था के ज़रिये नहीं होता| आज समाज में सब जाति के लोगों के स्थिति एक जैसी ही है|

आज के ये स्थिति बदलने के लिए लोगों को एक साथ जुडकर काम करना पड़ेगा| जाति के पीछे भागेंगे तो कुछ हासिल नहीं होगा| तो काम की बात यह है कि धार्मिक अन्धकार में जीने से बहतर यह है कि अभावग्रस्त लोगों के लिए जीए| उन लोगों के उम्मीदों को जान देना, तो छप्पर उपन्यास इन सब केलिए एक संकेत है, सवर्ण हो या अवर्ण दिल सच्चा होना चाहिए, नहीं तो समाज का सुधार सपना रह जायेगा| तो मैं खुद कोशिश करती हूँ कि समाज को एक नया मोड़ प्रदान करे और सबको बराबरी का हक़ मिले| नहीं कि जाति के पीछे भागकर अपना कर्म भूल जाये| मेरी राय में सारे दलित दमित नहीं है और सारे गैरदलित संपन्न नहीं है| सबको एक समान का हक़ मिलना है तो सबको एक तरह का अधिकार होना ज़रूरी है, आरक्षण बराबरी का साधन नहीं होता, यह सब लोग जानते है लेकिन कोई मानने को तैयार नहीं है| छप्पर का नायक चन्दन का राय है कि "क्या हमको जीवन स्तर सुधारने के लिए प्रयास नहीं करना चाहिए| आखिर हम भी मनुष्य है, हमारा भी मन है यदि पढ़ लिखकर भी हम कुछ नहीं कर सके तो फिर हमारी पढाई लिखाई का क्या फायदा|"[6] लेकिन आज स्थिति वैसी नहीं है, आज तो पूरा अवज़र है, लेकिन कोई उसकी कदर नहीं करता, जो नहीं मिला सबको वह चाहिए, जो सामने है वह नहीं चाहिए|

जाति व्यवस्था में मेरा कोई विश्वास नहीं है| मैं इस प्रदूषित मानसिकता के बिलकुल खिलाफ हूँ| तो 'छप्पर' प्रासंगिक है दलितों के लिए भी और गैर दलितों के लिए भी|

संदर्भ सूची

1. जयप्रकाश कर्दम 'छप्पर' पुस्तक के फ्लैप से|
2. दलित साहित्य आन्दोलन – डॉ:चन्द्रकुमार वरठे (पृष्ट संख्या-67)

3. दलित समाज दशा और दिशा - पृष्ठ संख्या-31
4. जयप्रकाश कर्दम – छप्पर - पृष्ठ संख्या – 112 – 113
5. डॉ:रामवीर सिंह कमल-दलित समाज :दशा और दिशा - पृष्ठ संख्या-31
6. जयप्रकाश कर्दम – छप्पर - पृष्ठ संख्या - 38